प्रगति ग्रामीण विकास संस्था

बैतूल

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल, 2017 से 31 मार्च, 2018

प्रगति ग्रामीण विकास संस्था

प्रगति ग्रामीण विकास संस्था बैतूल द्वारा वर्ष 2017–2018 में बैतूल, छिंदवाडा एवं हरदा जिले के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर कुल 28 प्रषिक्षण कार्यक्रम हुये तथा संस्था के कार्यक्षेत्र भीमपुर विकासखण्ड के 5 गाँव पीपलढाना, झापल, मानकदण्ड, सिंगारचावड़ी एवं भाण्डवा में गर्ल्स एजुकेषन प्रोग्राम से जुड़ी गतिविधियों एवं विकासखण्ड आमला, जिला बैतूल क`05 ग्राम नयेगाँव, अम्बाड़ा, ससुन्द्रा, देवठान, नांदपुर, के माध्यम से मध्यप्रदेष में कार्य किया ।दलित अधिकार अभियान कार्यक्रम के माध्यम से कार्यक्रम से जुड़ी गतिविधियों का संचालन गॉव के दलित आदिवासी,एवं समाज की अंतिम पंक्ति के पिछड़े हुए निर्धन बेसहारा ,गरीब लोगों के बीच जागरूकता एवं बेहतर समन्वय को स्थापित करने के उद्देष्य से किया गया जिसमें मुख्य रूप से षिक्षा का महत्व व उसकी अनिवार्यता, षिक्षा में सुधार, बेहत्तर पारस्परिक समन्वय,सामुदायिक एकता,छुआछूत व भेदभाव की समाप्ति करना,स्वच्छता संबंधी,जलसंरक्षण संबंधी वृक्षारोपण,पर्यावरण संरक्षण, नषा मुक्ति,भूमि अधिकार, त्रिस्तरीय पंच ायती चुनाव की प्रक्रिया में समुदाय की सक्रिय भागीदारी, बच्चों के अधिकार, ग्राम समुदाय के लोगों के आर्थिक, सामाजिक बदलाव के लिये ग्राम स्तरीय समन्वय बैठकें,महिला हिंसा का विरोध ,एवं ग्राम के समुदाय को अपने विकास के लिये समूहो के रूप में तैयार कर अपने गॉव के विकास के लिये प्रोत्साहति करने का प्रयास किया गया जिससे इन समुदाय के दबे–कुचले व सामाजिक ,आर्थिक तथा नैतिक रूप से पिछड़े इन लागों को समाज के विकास की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया गया जिसके अंर्तगत संस्था के क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं द्वारा अपने कार्य क्षेत्र में सतत् रूप से ग्राम समुदाय से निरंतर समन्वय बैठकें, प्रषिक्षण, अभियान जैसी गतिविधियों को आयोजित किया गया ।

फील्ड लेवल कार्यकर्ता प्रषिक्षण नीपि और लालिमा अभियान

दिनॉक 28.09.2017 से 25.11.2017 तक बैतूल, छिंदवाडा एवं हरदा जिले के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर कुल 28 प्रषिक्षण कार्यक्रम हुये ।

प्रतिभागियों की संख्याः–

कमॉक	प्रतिभागी	संख्या
01	ए.एन.एम.	686
02	आषा सहयोगी	**250**
03	आई. सी. डी. एस. सुपरवाईजर	**125**

04	अन्य	**120**
	कुल	**1181**

। सभी प्रतिभागियों का पंजीयन कराया गया तथा पेन ,फोल्डर ,पेड ब्रोसर प्रदान किये गये। सत्र् की षुरुआत बी.एम.ओ. संभागीय समन्वयक बी.ई ई.. बी.पी.एम. बी सी एम एवं प्रगति ग्रामीण विकास संस्था बैतूल के प्रषिक्षकों द्वारा प्रषिक्षण दिया गया । सभी सहभागियों को एक दूसरे के परिचय से षुरुआत की गईं। जिसमें अपना नाम ,पद ,पदस्थान एवं विभाग को बताया गया ।

अपेक्षाएः–

1. अपेक्षाओ में प्रतिभागियो ने बताया की आयरण की कमी किस कारण से होती है तथा उसकों किस विधि से दूर कर सकते है
2. षाला षिक्षको को कैसे विष्वास दिलायें कि वों छात्राओं को समय पर आई.एफ. ए. की खुराख समय –समय पर दे सके ।
3. हमें समुदाय में जागरुकता कैसे ला सकते हैं।
4. व्यवहार परिर्वतन पर जानकारी मिले ।
5. लालिमा अभियान के बारे में जानना ।
6. खून की कमी की रोकथाम के उपाय ।
7. रिपोर्ट प्रणाली के बारे मे जानकारी ।
8. नीपी कार्यक्रम के बारे में समझ विकसित करना तथा कार्यक्षेत्र के ग्रामों में सुचारू रूप से लागू कैसे करेंगें ।
9. एनीमिया के बारे मे विस्तार से जानकारी तथा ग्रामीण क्षेत्र में लोग की समझ विकसित करने के उपाय ।

10. कार्यक्षेत्र के सभी हितग्राहियों का हिमोग्लोबीन टेस्ट की जॉच को किस प्रकार से निरन्तर रखा जा सकता है ।
11. नीपी कार्यक्रम से संबंधित सभी विभागों में समन्वयन प्रक्रिया कैसी होगी ।

प्रषिक्षणकी पद्वति :–

❖ प्रषिक्षण में आयोजन प्रस्तुतीकरण ,सामूहिक चर्चा व प्रष्नोततरी पद्वति का प्रयोग किया गया ,विभिन्न विषयों पर प्रतिभागियों को प्रस्तुतीकरण के साथ विषय पर चर्चा की गयी तथा प्रतिभागियों ने स्वंय ही जवाब दिये व विषय को समझााने में आसानी हई ।

आंकलन पत्र :– सभी प्रतिभागियों से आंकलन पत्र भरवाये गये ।

<u>**प्रशिक्षण का उद्देष्य**</u> :–प्रषिक्षकों द्वारा प्रषिक्षण कार्यक्रम का उद्देष्य मैदानी कार्यकर्ताओं को आयरन फोलिक एसिड और अनुपूरण कार्यक्रम तथा कैल्षियम इत्यादि पोषक तत्वों के अनुपूरण हेतु राज्य शासन द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में तथा उनके बेहतर संचालन हेतु की जाने वाली आवष्यक तैयारियां, विभिन्न विभागों का समन्वय तथा उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता व सहयोग की जानकारी प्रदान करना था, ताकि मैदानी स्तर पर कार्यक्रम का समुचित कियान्वयन सुनिष्चित किया जा सके। मैदानी कार्यकर्ताओ को एनीमिया , विटामिन ए , आयरन फोलिक एसिड, जिंक,कैल्सियम इत्यादि के प्रति समझ बढ़ाना।

1. एनिमिया क्या है ?
2. एनिमिया के लक्षण ?
3. विटामिन सी का महत्व ,कृमि संक्रमण से बचाव ,हाथ धोने की प्रक्रिया क्या है ,आयरन लेने से पूर्व कौन सी सावधानियॉ रखे ।
4. निपि कार्यक्रम और लालिमा अभियाान क्या है तथा आयु वर्ग क्या है ?

एनीमिया क्या है तथा उनके लक्षणों , जैसे, सांस फुलना, थकावट ,घबराहट ,चक्कर आना, ध्यान में कमी ,बार–बार बीमार पड़ना , माहवारी में अधिक खून बहाव के संबंध में जानकारी दी गई । गंभीर एनीमिया के लक्षण जैसे हाथों व पैरो में ठडापन या संवेदन सुन्न हो जाना , तीव्र घबडाहट ,बेहोष हो जाना , दिल का बहुत तेजी से धड़कना को बताया गया ।

एनीमिया के संभावित कारण – ,आयरण की कमी ,षारीरिक आयरन विघटन में वृद्वि ,बाल्यावस्था ,किषोरावस्था ,गर्भावस्था एवं धात्री काल में आयरन की अधिक आवष्यकता ,माहवरी के दौरान अधिक रक्तस्त्राव ,सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे विटामिन बी –12 फोलिक एसिड की कमी ,अनुवाषिक रोग जैसे सिकल सेल एनीमिया व थैलेसीमिया , दीर्घकालिक बीमारिया जैसे कैसर ,एच. आई वी. /एड्स ,मेलेरिया संक्रमण भोजन में आयरण के स्त्रोंत ,कृमि संक्रमण से बचाव तथा साबुन से हाथ धोने की प्रक्रिया को बताया गया ।

आयरन के प्राकृतिक स्त्रोत षाहकारी ग्रुप कमॉक 02 ने हरी सब्जियों में पॉच प्राकृतिक मैथी ,चौलाई , मूली के पत्ते ,सरसों ,पालक भाजी स्त्रोत , मुगना भाजी अरबी के पत्ते,चोलाई भाजी पुदीना ,अंकुरित दाले के चना ,मूंग, मोठ गुड़ खजूर, पोहा, तिल, बाजरा ,सोयाबीन ,चुकन्दर व अनार तथा मांसाहारी स्त्रोत मछली ,मीट, अंडा ,मुर्गा,कलेजी ,के बारे में बताया कि आयरन के स्त्रोत होते है ।

विटामिन सी युक्त आहार में नींबू ,सतरे अमरूद कबीठ आंवला आदि सब्जियों और अनाजों में प्राप्त आयरन के अवषोषण में मदद करते है ऐसा बताया गया ।

भोजन के पहले या बाद लगभग 2 से 3 धन्टे बाद ही चाय कॉफी अथवा सोडा युक्त पेय पदार्थ लेना चाहिये नही तो ये आयरन के अवषोषण को बाधित करते है तथा आयरन के बाद तुरन्त कैल्षियम गोलियों का सेवन नही करना चाहियें ।

कृमि एक परजीवी है जो अपने जीवन के लिये दूसरे जीवों पर निर्भर करता है । जो पाचन प्रणाली में बाधा डालते है जो आंतो में रहते है जो कृमि संक्रमण से होने वाली समस्याओं में सबसे मुख्य है। षौचालय में ही षौच करें अन्य स्थान में षौच न करें , हमेषा जूते या चप्पल पहने ,षौच के बाद और खाना पकाने एवं खाना खाने से पहले साबुन से अच्छे से हाथ धोना चाहिये,तथा फलाहार एवं सब्जियों को अच्छे से धोकर या साफ करके इस्तेमाल करना चाहिये । मल के प्रदुषित मिटटी में कृमि के अडे पाये जाते है जो लार्वा बनकर पैरो से षरीर में प्रवेष करते । हाथों को साफ–सफाई से साबुन लगाकर अच्छी धोने की प्रक्रियाओं को बताया गया ।

प्रषिक्षको द्वारा बताया गया कि निपि एक बड़ा कार्यक्रम है जिसमें एनीमिया की रोकथाम के लिये जीवन चक्र आधारित नीति को अपनाया जाता है । जिसमें सभी आयु वर्गो को सम्मिलित किया गया है । 6–60 माह के बच्चों ,5से 10 वर्ष के बच्चे 10 से 19 वर्ष के किषोर किषोरियों गर्भवती ,धात्री व आयु वर्ग 15 से 49 वर्ष की महिलाओं में आयरन के अनुपूरन का प्रावधन है। यह भी बताया गया की वर्ष में एक बार नेषनल डिवर्मिंग डे के अन्तर्गत कृमिनाषक एल्बेन्डाजोल की गोली आयुनुसार तथा अलग–अलग कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारियों को बताया गया। जिन बच्चे की उम्र 5 से 10 वर्ष तथा 19 वर्ष से अधिक उम्र की किषोरियों को ऑगनवाडी कार्यकर्ता के माध्यम से प्रत्येक मंगलवार को दी जायेगी ।

एनीमिया का अंदाज उसके हथेली जीभ नाखूनो ऑख की लालिमा में कमी देखकर किया जायेगा। एनीमिया की जॉच एवं चिन्हित की जिम्मदारी को उम्र के अनुसार बताया गया । कृमिनाषक गोलियों के सेवन से कुछ बच्चों में उल्टी ,जी मचलाना,पेटदर्द या थकान के लक्षण उत्पन्न हो सकते है । ये लक्षण मामूली एवं अस्थाई होते है । गंभीर

लक्षण ा होने पर 108 के माध्यम से निकटस्थ स्वास्थ्य केन्द्र में पहुॅचाना जाये ।

प्रषिक्षको द्वारा बताया गया कि कैल्षियम अनुपूरण कार्यक्रम में हितग्राही गर्भवती माता एवं धात्री माता होती है । कैल्षियम अनुपूरक कार्यक्रम से लाभ प्री एक्लेम्षिया से बचाव , समय पुर्व जन्म एवं षिषु मृत्यु दर को रोकने मे सहायक होता हैं। मॉ की हड्डियों के खनिज तत्वों एवं मॉ के दूध की गुणवता बढ़ाने मे लाभकारी तथा नवजात षिषु की हड्डियों का पूर्ण विकास होता है

कैल्सियम की खुराक पर चर्चा की गई तथा कैसे कब लेना चाहिये एवं उसके विपरीत प्रभाव नही है परन्तु खाली पेट लेने से पेट में जलन ,दर्द एवं जी मिचलाने की षिकायत हो सकती है इसका सेवन भोजन के बाद ही करना चाहिये तथा आयरन की गोली व कैल्षियम की गोली में दो घन्टे का अन्तर रखना चाहिये नही तो यह आयरन के अवषोषण को कम कर देता है ।

प्रतिभागियों ने कैल्षियम के अवषोषण को बढाने में सहायक तथा मछली , अंजीर , भाजी , अण्डे दूध पनीर एवं दुग्ध उत्पाद , तिल गुडू के लड्डू मे कैल्षियम होता है । कैल्षियम सप्लीमेट की गोली तथा विटामिन डी का मुख्य स्त्रोत सूर्य का प्रकाष को भी बताया गया ।

प्रषिक्षको द्वारा कार्यकर्ताओ की भूमिका तथा आपूर्ति तथा वितरण एवं रिपोर्टिंग प्रणाली तथा विभागीय जिम्मेदारी को बताया गया

- रिपोर्टिंग क्यो जरूरी है ?
- गलत रिपोर्टिंग क्या होती है ? इसके क्या प्रभाव पढ़ते है ?
- आपूर्ति श्रृखला क्या है ?
- आवष्यकता का आंकलन क्यों जरूरी है ?
- आवष्यकता का आंकलन कैसे किया जाता है ?

- निपी कार्यक्रम अंतर्गत रिपोर्टिंग व्यवस्था क्या है ?
- निपी कार्यक्रम अंतर्गत विभिन्न रिपोर्टिंग प्रपत्र कौन कौन से है?
- विभिन्न विभागों के कार्यकर्ताओ के रिपोर्टिंग में क्या दायित्व है ?

❖ यदि किसी स्कूल में रिपोर्टिंग प्रपत्र उपलब्ध नही है तो उपस्थिति रजिस्टर में बच्चो के नाम के आगे बिन्दू लगा सकते है जिससे प्रति सप्ताह खायी जाने वाली आयरन टेबलेट की जानकारी उपलब्ध रहे व आषा को रिपोर्ट प्रदान की जा सके ।

रिपोर्टिंग प्रणाली

:—

संचार एवं परामर्ष कौषल के बारे में जानकारी दी गई जिसमें — छोटे समूहो में चर्चा या आपसी बातचीत से विचारो का आदान प्रदान होता है आसानी से लक्ष्य समूह तक अपनी बात पहुॅचाई जा सकती है । छोटे समूह मे चर्चा या आपसी बातचीत हेतु **ळ।ज्भ्म्** तकनीक पर

विस्तार से चर्चा की गई तथा उसका उपयोग

करने के लिये प्रेरित किया गया ।

समस्या :–

1- कई जगह पॉच वर्ष से छोटे बच्चे प्रायवेट स्कूलों में जाते है तो उन्हें आयरन सिरप कैसें उपलब्ध करवाया जाये ।

2- विकासखण्ड स्तर से पर्याप्त समय पर दवाईयॉ नही मिल पाती है

3- लोगो मे जागरूकता की कमी है होने के कारण दवाईयों को नही लेते है ।

4- अभी को आयरन की गोली आ रही है वह नमी के कारण फट जाती है ,जिससे हितग्राही खराब समझकर नही खाता ।

5- षिक्षक बच्चों को दवाई नही देते है ।

6- ग्रामीण हितग्राही में अंधविष्वास अधिक है ।

7- किशोरी बालिकाओं को पर्याप्त दवाईयॉ नही मिल पाती है ।

8- षिक्षक रिपोर्ट देने से मना करते है ।

सुझाव :–

1. नीपी कार्यक्रम में नीपी से संबंधित विभागों का सयुक्त कार्य करने से सफलता प्राप्त हो सकती है ।
2. दवाईया समय पर उपलब्ध होना चाहिये ।
3. रिपोर्टिंग सही हो ताकि योजना का लाभ सही हितग्राही तक पहुॅचें ।
4. इस कार्यक्रम में समय –समय पर मानिटरिंग जरूरी है ।
5. प्रतिभागियों ने कहा कि आई सी डी एस की मासिक बैठक में स्वास्थ्य विभाग से भी लोग सम्मिलित हों ताकि बेहतर समन्वय हो सके ।

6. आई सी डी एस के एमआई एस साफटवेयर मे प्रत्येक माह बच्चों के हिमोग्लोबिन की जानकारी ली जाती है । प्रत्येक माह बच्चों के हिमोग्लोबिन की जॉच करवाई जानी चाहियें ताकि सही जानकारी भेजी जा सके ।

7. प्रषिक्षण हर तीन मा ह मे होना चाहिये ।
8. ऑगनवाडी कार्यकर्ता को भी प्रषिक्षण होना चाहिये
9- नीपी काग्रक्रम से संबंधित विभागों का समन्वयन होना चाहियें ।
10- नीपी कार्यक्रम को अधिक रूचिकर बनाने के लिये गॉवों मे नुक्कड़ नाटक के कार्यक्रम होना चाहिये

11- नीपी कार्यक्रम से संबंधित समय –समय पर प्रषिक्षण कार्यक्रम होते रहना चाहियें ।
12- आयरन सीरप का स्वाद मीठा होना चाहिये तथा आयरन टेबलेट केप्सुल रेपर में होना चाहियें ।

फीडबेक :–

1. एक्लेम्षिया में कैल्सियम का क्या कार्य है उसकी जानकारी प्राप्त हुई ।
2. आयरन ,कैल्षियम देने का सही तरीका पता चला ।
3. संचार व परामर्ष षैली के बारे में समझ बनी ।
4. रिपोर्ट के बारे जानकारी प्राप्त हुई ।
5. आयरण के दुष्प्रभाव के बारे जानकारी प्राप्त हुई ।
6. समस्त स्तर पर मासिक ए.एन.सी प्रतिवेदन मे कैल्षियम अनुपूरण की प्रविष्टि के बारे में जानकारी मिली ।
7. एनीमिया के बारे मे समझ विकसित हुई ।
8. सहभागिता के बारे में समझ विकसित हुई

।

9. कम्यूनिकेषन शैली के बारे में समझ बनी । जिससे कार्यक्षेत्र में बेहतर कार्य कर सकते है ।
10. समस्त स्तर पर मासिक ए.एन.सी प्रतिवेदन मे कैल्षियम अनुपूरण की प्रविष्टि के बारे में जानकारी मिली ।
11. लालिमा अभियान से संबंधित जानकारी मिली जिससे कार्यक्षेत्र में कार्य करने के लिये समझ विकसित हुई

प्रषिक्षण पश्चात् सभी प्रतिभागियों से आंकलन पत्र भरवाये गये तथा पूर्व एवं पष्चात् आंकलन पत्र का विष्लेषण किया गया ।

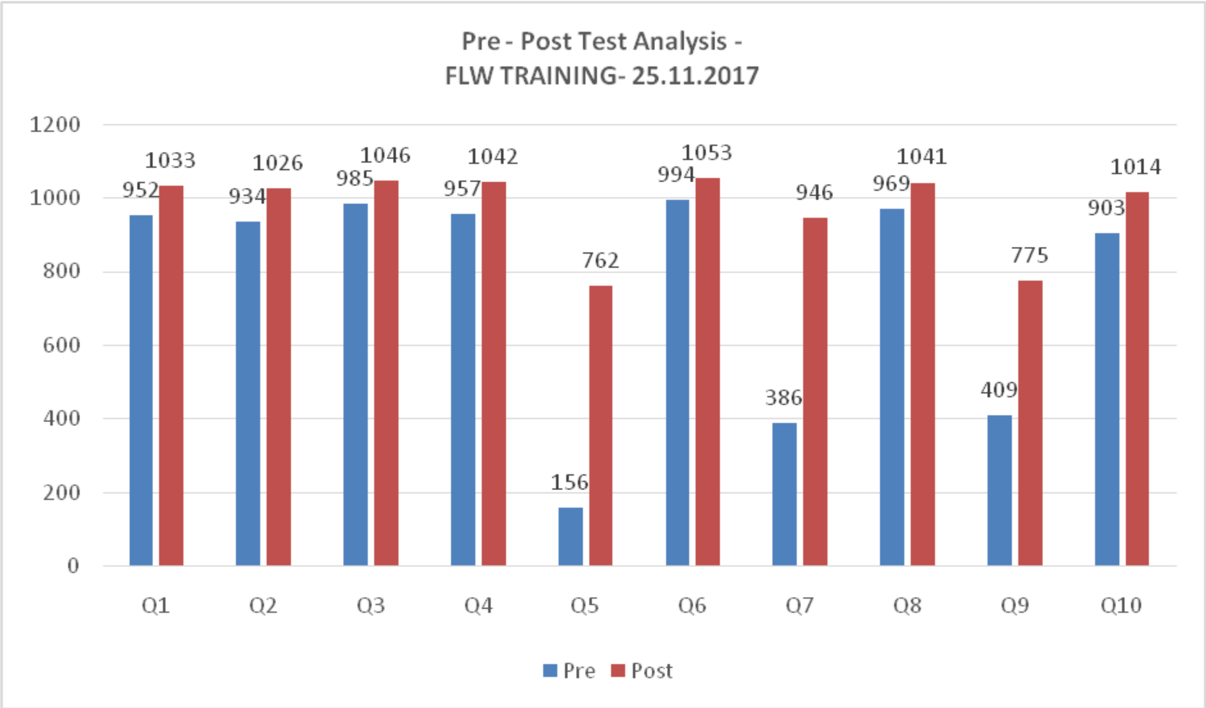

प्रतिभागियो द्वारा आभार व्यक्त करते हुयें बताया की यह प्रषिक्षण निष्चित ही हमारे मैदानी कार्यकर्ताओ के कार्य में

सहायक होगा। हम आषा करते हैं कि समस्त मैदानी कार्यकर्ता आज के प्रषिक्षण कार्यक्रम का अपने कार्य के दौरान समस्त जानकारी का उपयोग करके कार्य को सफल बनाने मे अपनी भूमिका निभायेंगे हम इस प्रषिक्षण कार्यक्रम के सहयोग के लिये जी.ई.ए.जी. भोपाल एवं प्रगति ग्रामीण विकास संस्था बैतूल का आभार व्यक्त करते हैं।

ग्राम सम्पर्क कार्यक्रम :–

पिछलें दिनों इसी प्रकार से हमारे गांव मे रोजगार गारंटी योजना के कार्यो के तहत् एक सबसे बडी समस्या निकलकर आयी। जिसमें गांव मे रोजगार गारंटी के तहत् पहलें लोगों से ही काम कराया जाता था और इससे लोगों को रोजगार भी मिलता था और उनकी आमदनी भी अच्छी खासी हो जाती थी। लेकिन हुआ यें पंचायत ने गांव मे विकास कार्यो को गति प्रदान करने के लिए की मषीन आने से मजदुर के लिए कोई काम नही पंचायत भी कोई काम नही देती। जिसके कारण लोगो को अधिक संख्या में पलायन करना करना पड़ता है । जिससे बच्चों की षिक्षा पर बुरा असर पड़ता है ।

बाल पंचायत :–

प्रतिमाह बाल पंचायत का आयोजन किया जाता है जिसमें छात्राओं के द्वारा कई प्रकार के प्रस्ताव पास किये जाते है तथा कई नियम गिनाये जाते है जिस प्रकार से वास्तविक पंचायत में कार्य होता है ठीक वैसे ही इस बालिका पंचायत में होता है। यह सारी गतिविधि होने के बाद में सभी छात्राओं स्वतंत्रता दिवस पर की जाने वाली गतिविधि के बारे में अपने–अपने विचार रखें और निर्णय लिया गया कि किस छात्रा का क्या काम होगा सभी छात्राओं के द्वारा विभिन्न प्रकार की तैयारी के निर्णय लिये गये। बालिका पंचायत को प्रारंभ करने से पूर्व माह में जो गतिविधि की जाती है उसके बारे में पूर्वालोकन किया जाता है उसके बाद में ही आगामी बैठक की कार्रवाई को प्रारंभ किया जाता है।

आदिवासी क्षेत्र में निवास करने वाली छात्राओं में पंचायत स्तर पर किस प्रकार से कार्य किया जाता है इसके बारे में समझ बनाने और निर्णय किस प्रकार से लिए जाये यह उन्हें बताने के लिए प्रतिमाह, माह के अन्त में बालिका पंचायत आयोजित की जाती है। जिस प्रकार के निर्णय वास्तिविक पंचायत में लिये जाते है, उसी प्रकार के निर्णय बालिका पंचायत में लिये जाते है। बालिका पंचायत में बाल दिवस, महात्मा गांधी जयंती, क्रिसमस इत्यादि के बारे में चर्चा की जाती है। इससे बालिकाओं में समझ का विकास होता है। बालिका पंचायत में बालिकाओं से चित्र भी बनवाये जाते है। जिससे उनमें प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है। बालिका पंचायत में षिक्षा, स्वच्छता, मनोरंजन, खेल, व्यायाम, राष्ट्रीय पर्व, शाला की स्वच्छता के बारे में चर्चा जाती है।

शासकीय कार्यालयों से सम्पर्क : कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों की सूचना एवं शालेय षिक्षकों से अनुमति हेतु विभिन्न शासकीय कार्यालयों से सम्पर्क स्थापित किया गया, जिसके अंतर्गत छात्राओं को जीवन कौषल प्रषिक्षण के लिये ले जाने की स्थिति में शाला षिक्षकों व प्राध्यापक से सम्पर्क कर उन्हें गतिविधि की सूचना देकर उनकी अनुमति ली जाती है एवं समय समय पर मनाये जाने वाले महत्वपूर्ण दिवस के आयोजन के संबधं में शाला षिक्षकों को सूचित किया जाता है।

प्रमोद नाईक
सचिव
प्रगति ग्रामीण विकास संस्था बैतूल